माधवविलास नाटकके

गायनो.

श्री अहमदावाद गुजराती नाटक कंपनीके वास्ते

रचनार

कवी छोटालाल रुखदेव.

छपावी प्रसीद्ध करनार

श्री अमदावाद गुजराती नाटक कंपनी.

आवृति २ दुसरी. प्रत ५००

अमदावाद

"विजय प्रवर्त्तक" प्रेस.

संवत १९५६ सने १८९९

किमत रु. ०-२-०

श्री.

श्री माधव विलास नाटकका संक्षीप्त इतिहास.

बाब १ ला.

दृश्य १ मंगळाचरण.

,, २ जयंतीपुरके महाराजा वीरसींहकी नवीन स्त्रीका बगीचेमें आना बाद पुत्रका इसी जगेपर आना अपर माताका पुत्रके पर आशक होना कचेरीका मंत्रोपदेश बाद महाराज विरसींहका उस जगेपर आना रानीका छाळ प्रपंच करके राजाको अंत:पुरमें न आनेका समजाना.

,, ३ राजा वीरसींहका हजुरी नौकर लालखांके वहां कोइ बनीयाका अपने पैसेकी उघैनी आना लालखांका रुपये न देते दम देकर खाता वसुल कराना बाद उनका दोस्त जमालखांका वहां आना और कचारीमें अपना सभी तरकट जाहीर हो जानेका हाल कहेता डरमें भागके लालखांका फतेहपुर शाहके पास जानेका इरादा.

,, ४ रानी कनककळा अपने पुत्रके साथ झार कर्म करने कहेतीहै पुत्र माधव उनको धीक्कार दे युक्ती पुर्वक पत्र लीखाय लेके पसार होताहै.

,, ५ माधव और मीत्र विलासका मीलना बाद माधव अपने पर बीती हुइ आफत मीत्रसें कहेताहै फीर इस दुष्ट माताके पासमें हरदम रहेनेमें डर समजके बीदेशको जाना साथ मीत्रका भीजाना.

,, ६ कनककळा रानी माधवके बीदेश जानेमें बहुत खुश होतीहै और महाराजा बीरसींहको पुत्रकी बदचालीकी खोटी बात करके पीता पुत्रके शुद्ध स्नेहमें ध्वेशभाव उत्पन्न करतीहै.

,, ७ विलास और माधवसींहका जंगलमें आना जलकी तालाशके लीए जाते एक दुसरेका अन्य होना.

दृश्य ८ सुवर्णपुरके महाराजा समरसींहकी बेटी अपना पती अरण्यवासी होनेका वर्तमान जानके सतीत्वका धर्मको समालके मातापीताका कहेना न मानते चुपकीसें जंगलमें स्वामी शोधके लीए जाना साथ प्रधान पुत्रकी स्त्री लक्ष्मीका भीजाना.

„ ९. महाराजा देवीसींहकी पुत्री इन्दुमतीका सखी सह हास्य विनोद बाद कोइ सखीका पत्र लेके वहां आना स्वामी माधवके बीदेश जानेसें बेशुद्ध होइ गीरना फीर चुप चाप लाग देखके स्वामी मीलनेके लीये जंगलमें चले जाना.

„ १० महाश्वेता और लक्ष्मीका जंगलमें आना बाद वेश्याका उस ठीकाने पर आना फीर इन दोनो लडकीयोको सगपन नीकालके अपने वहां ले चलना.

„ ११ कनककळा अपनी दासीसें अपनी प्रपंचकी तारीफ कर रहीहै. बाद राजाका आना परस्पर हास्य वीनोद अकस्मात मजुरका रानीने माधवको अपने प्रेम करनेका लीखा हुआ पत्रका प्रगट होना राजाका क्रोध स्त्रीको देशनीकाल और पुत्र माधवके लीए शोच.

बाब २.

दृश्य १ वेश्याके घरमें महाश्वेता और लक्ष्मी, महाश्वेताको प्रधान पुत्रसें प्यार करनेको समजाना आखीरमें चाबुक मारना बाद लक्ष्मीकी युक्ती, अपना पतीकी पैछान, महाश्वेताको मुक्त करना, बाद वेश्याका महाश्वेताके हाथसें मृत्यु, महाश्वेताको छोड लक्ष्मीका पतीके साथ जाना.

„ २ जंगलमें मीत्र वीयोगी माधवको नीमकहराम लालखां सीपाही उनको फसानेके लीए भरोसादे अपने साथ फतेपुरको ले जाताहै.

„ ३ बनीआ और उनकी स्त्री, बनीआशाहके वहां नौकरीके इरादे जाने चहाताहै मार्गमें अत्तरवालेसे मुलाकात, दोनोका झगडा सीपाहीका दोनोको कचारीमें ले जाना.

„ ४ लालखां वीरसींहका पुत्र माधवको अपने वहां रखनेका बंदोबस्त करके अपना हाल सुनानेको खुशी होता शाहके पास जाताहै.

दृश्य ५ जंगलमें माधवकी स्त्री इन्दुमती अपना स्वामी और अपनी मौसीकी बेटी वो दोनो फतेहपुरमें शाहके हाथ फसे हुए जानकर इनको छुडानेके लीए वोभी फतेहपुरको जातीहै.

„ ६ लालखांशाहके पास माधवको पकड लानेसे अपनी होंश्यारी दीखाताहै घनीआ और सोदागर लडते लडते व्हां आतेहै सोदागरको खीदमत बनीएके मार बाद बनीआ उल्लु लाय देनेकी सरत करताहै अन्तरयालेका बनीएके घर जाना माधवका शाहके पास आना पकड्ना केद पकडाना क्षत्री बाला इन्दुमतीका माधवकेपर आशक होना लालखांका फोज ले जयंतीपुरकी तरफ लडाई करने जाना कचारि बरखास्त.

„ ७ माधव स्त्री इन्दुमतीका फकीर भेसमे रुपसुंदरीके पास आना माधवका हाल सुन लेना रुपसुंदरीको ह्यांसे छुडाने की ओर स्वामी माधवसींहसें लग्न कराय देनेकी प्रतीज्ञा विश्वास दे माधवकी भेटके लीए मीष्टान ले जेलके तरफ जाना.

„ ८ मीत्र बीलासचंद्रका जंगलमें भटकना. अकस्मात शेरके पंझेमे आय फसना यत्न नीष्फळ होनेसे बेशुद्ध होना. महाश्वेताकी गोळीसें शेरका नाश बाद बीलासचंद्र और महाश्वेताकी पैछान स्वदेश गमन.

„ ९ पुत्रके लीए वीरसींहका शोक फतेहपुरसें चमडासीका कागद ले आना. माधवका हाल सुन दीलगीर होना शाहसे युद्ध करनेका नीश्चय.

„ १० राजा समरसींह और पुत्री महाश्वेताका मीलाप बादवी स्वामी लाभसें हास्य वीनोद अकस्मात मीत्र माधवकी आफतका स्मर्ण होना पत्नीको छोड बीलासचंद्रका मीत्रकी शोधके लीए जाना पीछेसें स्त्री महाश्वेताका भीपुर्ष भेसमे स्वामी रक्षणके लीए जाना.

„ ११ जंगलमें माधवकी अपर माताको पश्चाताप भीलके हाथ फसना बाद बीलासचंद्रका व्हां आना भीलसें युद्ध स्त्री कनककलाका प्रसंग देख भाग जाना अकस्मात तीर लगनेसे बीलासका जमीनमें गीरना.

„ १२ बीरसींह और लालखांके लश्करका एकत्र होना परस्पर युद्ध बध वीरसींहका पकडायजाना.

बाब ३.

दृश्य १ माधवका जेलमें अफसोस बाद इन्दुमतीका व्हां आना. परस्परका गुप्त प्रेम अपनी बहेन रुपसुंदरीका स्वीकरने और शाहको मारके आपको छुडाय उंगीपसा कहेकर इन्दुमतीका जाना. स्त्रीका वीश्वास आनेसे लाग देखके माधवकाभी जेलमेंसे पसार होना.

,, २ बनीआ आर बनीयनका वातचीत उल्लुकी सरतसें बनीआका अफसोस बाद बनीयनका बनीयेका उल्लुकी शोधके लीए भेजना अतरवाला सोदागरके व्हां आना बाद खोटा प्यार करके सोदागरको फसाना. और उल्लु बनाना बाद बनीएका वहां आना. और उल्लुपर बैठ कचारीमें शाहके पास इनाम लेने जाना.

,, ३ जंगलमें माधव और इनकी माता कनककळाका अकस्मात मीलाप पुत्रके पास अपराधकी क्षमा मांगना बाद विलासकी आफत सुनाना राजा बीरसींहने पुत्र शोधमें भेजे हुए सीपाही लोकका आय मीलना सीपाहीके साथ कनककळाको फतेहपुर भेजके माधवका मीत्रकी शोधमें जाना.

,, ४ मलनमंत्र साधक अगोरीका वीलासको तेलके तवेमें फेकनेका ईरादा अकस्मात वहां जाय मीत्रको माधवका छुडाना. अघोरीका नाश मीत्रोका फतेहपुर तरफ पलायन.

,, ५ मुर्खशाह उल्लुलानेवाळा बनीयाको इनाम देताहै. बाद लालखां वीरसींहको पकड लाताहै शाह वीरसींहको फांसी देने फरमाताहै.

,, ६ जंगलमें पुरुष भेसमें महाश्वेता और वीलासका मीलना थोडु राज्य नौकरकी पैछान नीकाळ महाश्वेताका फतेहपुरको साथ जाना.

,, ७ लालखां वीरसींहका फांसी देने लाताहै. वीरसींहका फांसीपर चडना इश्वर स्तुती. माधवका स्मर्ण अकस्मात माधवका फोज ले आना पीता पुत्रका मीलाप दुष्ट लालखांको घरके फांसीपर चडाना. [सत्यमेव जयते]

,, ८ रुपसुंदरी माधवके भाग जानेसें दीलगीर होय इन्दुमतीको धीक्कारतीहै इन्दुमती आखीरमें बहेन रुपमें जाहीर होतीहै बाद दोनो कुमारीका शाहको मारनेके लीए जाताहै.

,, ९. शाहका शयनग्रह सोया हुआ शाहको जगायके इन्दुमती कटारसें मार देतीहै बाद माधवका लश्कर ले आ पहुचना परस्पर मीलाप आनंद. इश्वर स्तवन.

श्री माधव विलास नाटकके गायनो.

बाब १ ला.

१

मंगळाचरण.

शंकर प्रीय गीरजा, गंगा सखी जगदंबा,
श्री उमया वर वर वरवा, करशीर धरवा स्मर्ण
तुं करवा चहे अनुचरआ. शंकर.
गुर्जर जर जशवान करतुं,
जनम मृत भवदुःख हरतुं,
राग सुख संपत्ती भरतुं,
तीमीर अंतर टाळ. शंकर.
नाटय नायक पात्र लायक,
मंत्र तारा सीधी दायक;
डर रहीत थइ गाय गायक,
लीला तारी बाळ. शंकर.
जगवीशे जगदीश करजे,
यश अमल सौनो अमरए;
पाइ अमृत ज्ञान धरजे,
मोक्ष देवा ख्याल. शंकर.

गरबो— २

सखी शरदचंद्रनी खीली चांदनी,
से'जे हरशती संयोगी सुंदरी; सखी.
केशर चंदन चरचीया, श्वेतांबर धरी अंग,
महेके मालती मलपती, उछळे मदन तरंग;

ललीत लक्ष्मी लजाय लाल रंगे भरी,
सखी कंठे वींटाइ वाली कंथनी, आठे अंगथी आलींगे सुंदरी. स.
कनक लता सम कामीनी, स्तन फळ कंचन कुभ,
वल्लभ वृक्षे वळगीजो, मधुकर आ कळी चुब.
पीयु पोढो पलंग रही पाथरी,
प्रीय पुश्प सुगंध अनंग नवे रंगथी भरी. सखी.
सरस शरीर सरसज युवा, भ्रमर रसे लुभाय,
स्वामी सुरज उगतां, परम प्रफुलीत थाय,
रसीक राजथी रमे रसीली भाव करी.
सखी वीरही वनीता स्नेह व्याकुळी,
वळे जोबननी जवाळ सुंदरी, सखी.

माधव— ३

स्नेही शुं सुखकर सुंदर बाग, वीवीध तरुवर पशु पंखी राग.
सुमन वाडी संसार तणी कळी अद्‌भुत मन हरखायरे.
नवरंगी फुल बाळ तरुण अती, खील्यां खर्यां दर्शायरे;
नरतन सुमन समु क्षणभगुर, वरशा वश करवांण.
सुगंधी प्राण जतां शब जाण. स्नेही.
वीण माळी क्यम उपवन बनीयुं, मन अचरज तुं मानरे;
वनमाळीनी अकळकळा छे, अकळ तेनुं अनुमानरे.
सकळ नीयमने स्वाधीन राखी, रचतां पृथ्वी पहांण;
अलखजो जाण सफळ भव प्राण. स्नेही.

कनककळा— ४

प्रीय मुरती ए मन वशी, आहाहाहा गइ मदनां कुश लगावी,
लटकाळी, रुपवाळी, छबी न्याळी, गइ खशी. आहाहाहा. प्रीय.
प्रीय चींतामणी के रजना मणी, कचनवरणी मम मनहरणी,
चाली गइ हशी, स्नेही संगे, शा तरंगे. अहाहाहा. प्रीय.
वश करी व्हाले, चंचळ चाले, प्रेमनी जवाळे आ तन बाळे,
फंदे हुं फशी आ प्रसंगे जा उमंगे. आहाहाहा. प्रीय.

कनकमालीका— ५

सखी अधरम आदरो योग्य न ए,
पती छळी फळ मामशो योग्य नरे;
अंधने अपंग रोगीजो, गरीब क्रोधी व लोभी हो,
शेवे पती स्वामीनीओअे. सखी.
अहीं सुख संपती पामी, अंते थाय मोक्षना गामी,
सती प्रभु माने स्वामीओने. सखी.
राज रस राज रुपे, तजी मोह्यां बाळ स्वरुपे,
धीक माता कामीनीओने. सखी.

वीरसींह— ६

बाळा न बोलशे अरे, रसाळ वेणथी खरे.
चपळनयन वीनयी वदन, स्थीर मुन्य शे मीशे. अरेअरेअरे,बाळा.
रसीक हंसली रीसाय,राजहंस कयां जशे. हरे हरे हरे, बाळा.
ललीत चंद्रीका रीसातां,चंद्र मलीन आ थशे,अरे अरे अरे वा.

वीरसींह— ७

रे वामा वीनयी ललना लक्ष्मी,ललीत ललीतलटकाळी.हांरेप्रीय.
तुं व्हाली वेली बाळी न्याळी,मनहर रसीक रुपाळी. हांरेप्रीय .
शान्ती धरी गवरी सती वृत, पुजन करजो प्राण,
हर सुंदरी वीपत्ती हरी, दे सुत संपत सुख ल्हांण;
ए दीले प्रीया कळी. हांरे प्रीय
जाउ प्रीया वीरही करी, सुशीला नव धरशो खेद,
चंद्री कुमुदवर त्यागतो, तोपण नीयमे मळशेज,
द्यो रजा हळी मळी. हांरे प्रीय ललीत.

लालखां— ८

तोबा सीतम कया हुवा या अल्ला. या अल्ला.
भागो अब यांसे भला, होवेगी कुछ तो भला,
आइ हय सीरपे कजा, होवेगी भारी सजा,
हुवा अदालतमें सब दगा खुल्ला, या अल्ला.
जाना कहां को भाइ काबुल कास्मीर और करांची.

काशी कानपुर और जहांसी, उजन इंदोर सींध अंबाला,
लाहोर पंजाब और पटीयाला, अजमेर आग्रा और अल्हाबाद.
बोम्बे मद्रास और अमदावाद, पुना हैद्राबाद और महीसुर.
जाउं फतेपुर शाहके हुजुर, शाहको हेवाल करके मंजुर.
रैयत लाचार करुं, वाहवा, बनके सरदार फीरुं वाहवा.
राजा कोठार करुं, वाहवा, तोपोंका मार करुं वाहवा.
जबीतो खांसाब ये नाम सच्चा, तोबा.

कनककळा माधव— ९

आवो आवो रसीला उमंगे,
भेटो भावे वाला आ प्रसंगे
माता धारे शुं आ,
प्रीय रती कान्त, अहीं छे एकान्त, करो काम शांत, आवो.
मात मती शुं गइ तुज मारी,
मोहीत थइ जोइ मुरती रुपाळी;
(चुप रहो जरा वीचारो)
(वाला हजु कामकळामां समज्या नहीं के)
धीक व्यभीचारी,
ए हें हें हें हें हें हें हें. आवो.

माधव— १०

श्री अजब कळी काळ गतीहां मात बाळकथी चाहे रतीहां;
भाइ बेन सह तात सुताथी, धारे पलक मांही दुष्ट मतीहां;
मीत्र ए शत्रु सगांए शत्रु स्वारथी पैसा साटे प्रीतीहां;
वीणजर नरखर वानर सरखो, जोइ नीज नारी न पासे जतीहां.
ब्रामण भील शांघर घर भटके, भंगी पुराणीनी फोजो थतीहां;
न्याय नीती स्मृती शास्त्र डुब्यां सौ, राज्य प्रजा चहे म्लेच्छरीती हां;
मीत्र अजीत न्रप ते बन्या राणी, घरघर राणी शेठाणीनी तीहां.

कनककळा— ११

वाह कपट कळामां केवी हुं. वांह.

डाही डोळी वात बोली, बाळी भोळी केवी हुं;
राय छळी थइ भली, केवी हुं शाणी,
पतीनी मती शी सती केवाणी;
केवी हुं कामा सती के श्यामा, वेली के वामा रमा के रामा. वाह.
भला भला योगी छळया वेदे वखाणी;
रतीनी गती न कोइए प्रमाणी.
नयनो कश्यामां, खुबी हश्यामां, आवी गुनामां,
जराय नाना. वाह.

वीरसिंह— १२

हद थइ आहा थायुं शुं चंडाळे, शुद्ध कुळ बाळयुं अरे शुं अंगारे;
सुणी वात वहाली उठी उर जवाळ, छुप्यो क्यां छटेलो छोरोए कंगाळ.
पापी संत:पीने झट मारुं, मीय तारुं वृत टाळयुं;
पाळ्यो साप अरे डंश सामो करे, सारु एथी मरे दुष्ट बाळ. हद.

कनककळा अने कनक मालीका— १३

अली जो अबळा कळ केवी,
वाहवा बलीहारी देवी. अली जो.
भरमाव्या रसीक रसीक हाव भाव संगेरे,
जोजे न थाय भेद भंग, जीत्या सखी रण जंग;
प्रपंच न रहे अखंड, प्रभु देशे पुरो दंड,
स्वामीने छेतर्या.
छळबळ भेद करी बळ, अबला कळकेवी.
नचावती नर वानरो, नटडी नाना वीध;
नरवर सुरवर वाहीने, कार्य कर्युं नीज सीद्ध.
छुपावी में चोरी,
वाह गुणवंती गोरी
खटपटथी वश थइ नर मरकट, नाचता रशीक हावभाव संगेरे अली.

माधव— १४

छे गहन गती तुज करम न्रुप वीर राम नळ धरम;

पाम्यां दुःख परम. छे गहन गती,
जाण्युं न रामे वन जवुं प्रातःकाळे,
शंभु न समज्या भस्म भुजंग कपाळे;
श्री हरी शेष आसने लहे नहीं शरम. छे गहन.
रत्ना तजी गीरी पथ्थर कर्म फुटयाने,
गंगा तजी वीष वारुणी दीन खुटयाने;
हां दुष्ट दैव नहीं तने लगारे शरम. छे गहन.

अमरसींह— १५

कहेवु मान हठीली नादान, शु करती लवारी मुखे. कहेवुं.
शरम धरम तजी बकतां मुरख, वीचार न मगजमां;
मापनो भारा, दीकरी धारो काचो पारो कुंवरी हत्या पुर पुरवानी
नेण मारुं डाही शुं उथापनार. कहेवुं.

महाश्वेता— १६

दुखी भव सागररे शीरीते तरुं, बळतुं अंतररे क्यां जइने ठ
सुनो लागे संसार, सुख स्वप्ने नव लगार. दुखी.
नाथ रटणनुंरे नाव चीते धरुंरे,
भवदुःख सागररे, सेजे तो तरुंरे;
मोह दीपक बाळे पतंग, मरे राजाने रंक, दुखी.
जळवीण सरीतारे, शशीवीण रातडीरे,
पतीवीण नारीरे. सुतवीण मावडीरे;
जीव्युं तेनुं धीकार, बळजो एनो अवतार. दुखी.

इन्दुमती— १७

वरीश धरी वरमाळ, मोहन मन गमता हुं काले. वरीश.
गीरीजा परणी शंकर संगे, राधा श्री वीठल व्हाले. मोहन.
अंबर अंगे धारु उमंगे, मोती परोवुं वाळे वाळे. मोहन.
मदन रती समरनी सुख माणुं. अंकीत जे आ कपाळे. मोहन

इन्दु तथा सखीओ— १८

इन्दु—चीतानी चीतारे आ चीत्तमां लागीरे चीत्तमां लागीरे
सळगे छे काया सदायरे;

व्हाली बेन रडती छानीरे, आग अंतरनी अमने के. चींता.
श्याम वीभुषण अंगने, श्याम स्मशान अवाश;
श्याम वीना शुन्य रेन आ, शुन्य सखी सहवास.
शाणी बेन थाय शुं घेलीरे, शाने अकळाय साहेलीरे. चींता.
जीव जीव नीरदय बनी, थातां काया राख;
वायु वाला श्याम ज्यां, त्यां लइ जइने राख्य,
देखी तने बेन दुभातीरे, बळे भडके आ छातीरे. चींता.

महा तथा लक्ष्मी— १९

वन वन कोमळ पुष्प वीखरतुं. बळी बळी थाये खाख;
मणी धुळ मांही रोळायरे हायरे हाय
हो सलुणी सखी मारी शान्ती राख,
फुलनी माळा करी कंठ धरशे, स्वामी जनेतुं मनथी चहाय.
कदी साह्य हरी थाय.
हो सलुणी सखी मारी शान्ती राख.
भवजळमां स्त्री कोमळ कुमुदी आ पती वीरहे करमाय रेहाय.
चंद्र कीरणे तम शीतळ करशे, वाली शीदने तुं मन अकळाय
हो सलुणी सखी मारी शान्ती राख.

वीरसींह— २०

नफट नादान नारी न काम करी कुकाम,
दुष्टा जा तुं लइ मुख स्याम;
प्रपंची झेरी नागणी नार, भरुसे कीधी हैया हार. नफट.
डसी वीक्राळ, तजावी बाळ, कर्यो ते काळ;
जा जा अहींथी चंडाळ. नफट.
कुलटा टळीजा मरीजा,
काळीका क्रुर काम करनार, कुंवर मम प्राणजीवन पीडनार;
कुछंदी नार तने धीक्कार हजार वार हटजा छटजा. नफट.

कनकळा— २१

हुं जेवी करम फुटेली, स्वामीने छळी हाय,

रंडा खुशी थाय, फट फट कैवाय, रे धीक नारी काय. हुं जेवी.
प्रीतम जीवन प्राणने, दुःख दे प्राण ले;
जीवती डाकीणी चुसी ले मांस काय. हुं जेवी.
पारका पीयुथी ल्हाण ले, छेवटे आ वले;
लोकमां लाजतां, नर्कमां ना ठरे. हुं जेवी.

बाब २ दुसरा.

रुपाळी— २२
मोरो घुंघट पकड मग ठाडोरी, आलीरी कैसो नीफट कनाइ.
मटकी फोर दधी लुटत जक जोरी. लाल अधरमें दे पीचकारी, मोरो.
देख भींजाइ नवरंग सारी; लुंट जोबन गयो कहां गीरधारी. मोरो.

रुपाळी— २३
मन मोहन सुंदर शाणा, प्रीतीनो पाक ल्यो,
गुलाब कळी भली खीली, वालमजी वाश ल्यो.
भुख्या भोजन मन भावे तेवुं आ चाखी ल्यो.
आलींगन चुंबन वाळा मन मोदक मानी ल्यो;
आवी अलबेली कळीओ, रस नव नव रंगी ल्यो.

स्वरुप— २४
जोवन मदमाती जानी दीलजान तुं;
दीलजान तुं जानी जीवजान तुं. जोवन.
तन मन धन अरपण तने, जोबन जीवन जान,
अलबेली अलगी न था, दे आलींगन दान.
गोरे गोरे चहेरे बन्यो बेभान हुं. जोबन.
घायल कीधो गोरी ते, मारी काम कटार;
प्रेमामृत पाइ प्रीया उगार आ बीमार.
वारी वारी जाउं प्रीया परीशान तुं. जोवन.

स्वरुप— २५
सती सुध शाणी नारी, प्रीया तें लीधो उगारी;

जती लाज राखी मारी. सती.
वैश्या वैतरणी वीशे (वहाली) डुबतुं तार्युं तन
गवरी सम गुणीयल मळी (वहाली) जातुं राख्युं जीवन.
रंडा जाती कुटील हर्युं बळ बुधी रुप युवन.
करी दशा आ नठारी. सती.
सगुणी सलुणी सुंदरी वाहाली संग सुधा तजी हाय.
नगणी गुणका नागणी, वाहाली ज्वाळे बाळी काय.
त्यागी नमणी मणी, कोल सा करमे चोर्या चोर.
जीवुं जींदगी धीकारी. सती.

स्तुती— २६

जे कुछंदी नार आ दशा थनार, लै वीचार सुवीचार मन धार,
आखर बनी लाचार, छांडीने द्रव्य माल.
भुंडे हाल जमने दवार छे जनार.
लुंटे प्रपंच माया, देखाडी जुठी माया, मोहां मुर्खवाहया.
हाय हाय रांड जातने धीकार, पैसानो बतावे प्यार;
थाय छे घणा गमार ख्वार.
मळ मांसे गंदी काया, कंइ आंधळा फसाया;
धन लाजथी लुटाया.
मागे एम आर्य बाळ, दुष्ट ख्याल दुर टाळ;
सहायथा सुकर्ममां कृपाळ. जे कुछंदी.

माधव— २७

पीडाय प्राण हाय प्रीय क्यां तुं रही;
तळाव तीर झुरे, चकवा चकवी. पीडाय.
वीरह रात्री तणी, अवधी ना आवी,
संग सुरज नहीं प्रगटे आवी;
सागर चंद्र कळा शीद दे सुकावी. पीडाय.

माधव— २८

भुखे दुखे जीव अकळाय,

मानु हुं आभार तमारो अपार दुःखीने लाचार. भुखे.
मरुं जुरी वन मांझ, कांटे शरीर वींधाय;
टाढ ताप न वेठाय, थाक्या फरी फरी पाय. भुखे.
थाये घणा वाघ वरु तणा नाद,
कांपे काया मन थायरे वीशाद;
वेरी थइ दुष्ट अरे हाय मात. भुखे.

लालखां— २९

छळ बळके लायामें कैशा शीकार, देखो हमारी उस्तादी एयार;
जाताहुं आताहुं शांहको दीखाताहुं, पाताहुं माल और जागीर
सरदार. छळ बळके.
आलममें नाम करुं होके सुलतान फीरुं,ऐसी समशेर धरुं होके मशहुर;
रुस्तमसीकंदर और लालोंकालाल मैहु,शाना तवगर क्यांजानेकंगाल.
कैशा होस्यार यारकैशा मोमार, खुशी रेना दीलदार काम
होगा सबपार.
कैशा नेकी दाना मै, जलदी जाकरके सुनाउं हेवाल. छळ बळके.

इन्दुमती— ३०

हीनभागी कायारे, दुखी थावा स्रजी;
मोहननी मायारे, नव जाय तजी.
नाथ गणी रघुनाथ, माळा रटतीरे;
क्यां क्यां हुं जोउंरे, सुंदर स्यामजी. हीन.
संसार सुख स्वल्प स्वामी संगरे,
लक्ष्मीने लाडीरे, ल्हेर समुद्रनी;
बाग सुखासन महेल, वन दव लागेरे.
समशाने सुवुंरे सेजे काष्टनी,
नीरजन वनमां हाय काय अकेलीरे;
पोकारी रामारे ह्यां रडती रही. हीन.

इन्दुमती— ३१

प्राणपती हुं सती, नव सुखी करुं;

शुं समजी अही वीरहे जुरती फरुं;
मीय रीबाय हाय वनने घेर. प्राण.
बेन बचावुं पापी करथी, ठार करुं खळ छळ बळ कळथी;
क्रूर करे शुं जुलम ए आम,
सती प्रतापे सुर कंपता;
नाथ बचावी करुं अचळ नाम.
पछी शुं रेवुं आम, ना ना ना. प्राण.

इन्दुमती— ३२

हुं दुःखीआरी राजकुमारी, तारे शरण टरुं;
बेन बचावी ले आ बळती, तारे पाय पडुं.
भान वीना हुं ज्यां त्यां रखडुं, वेठी दुख अपवास;
मात वीखुटी गरीब आगौ घेली न खाये घास.
वीरह वाघ पंजाथी चीरी रदय, लोही पीजाय;
गउ पाळक क्षत्री वीर न मळे कोण करेरे साहाय,
चडती पडती जगनी थाय लखीया लेख ललाट;
स्नेह सूरजना तापे बळती दुनीया बारे वाट.

रुपसुंदरी— ३३

अरे बेन अनीती केवी, दीन जन वीण वांके रीबे;
हाय शुं चाले क्षत्री अबला आधीन थइ रहीरे;
दैवे अरे हा दुरबल हरणां ससलांने मारे;
सुरशींह सुवर हाथीने हणवा, कोइ नहीं मन धारे;
रे काळ क्षत्री जाती मनहर काय जीवथी जवानीरे. अरे.
आकाळ अरे दुनीआने, दुख देवाने हाय आव्यो;
अन्न जळ वीना पीडीने, आखर मरण दीवस लाव्यो;
बळे हाय आ छाती मुज धीक धीक क्यां ठरवानीरे. अरे.
कंगाळ पशु पंखी गौ ब्राह्मण ज्यां त्यां पीडाता,
चंडाळ काळ क्रुर अमल करम एने सौ दुखी थाता;
नथी आग शहवाती तुज पण गती भुंडी थवानी. अरे.

रुप तथा इन्दु— ३४

सखीए मन मोहनने मेळवुं व्हाली थातुं धीरी बे'नी मारी
बेनी मारीरे, आशापुरे नाथ तारीरे.
जोबन ज्वालाथी बळी बाला, जल जीवन मन चाह्य;
दीवामां जेम जंतु मजले, बीन राग जेम हरणी मनले.
(प्रेमनी गती एवीज जाणो हो.)
(हा हा प्राण जाय पण प्रेम रहे छानोतो.)
वेली वेली जातुं वाली.
थातुं धीरी बे'नी मारी बे'नी मारीरे,
कामनी मालाहा रहुं व्हाला, राम तणा आराम;
प्रेम भक्तीए प्रीयवर वरशे, रमणीय मणी नीज कंठे धरशे;
(हा एज चाहुंछुं)
(ले ले त्यारे हुं ए पण झट जइने आवुंछुं.)
वेली वेली आव तुं वेली,
थातुं धीरी बे'नी मारी बे'नी मारीरे.

महाश्वता— ३५

दीलदार आवार वीचार शुं करो हांरे,
रे छेला छक पील्यो रस युवन मदन खील्यो.
हुं जोबन घेली रसीली कलीछुं, भृंग रह्या शुं रीसाइ;
आज आनंद सागर रेल्यो जणाये. दीलदार.
दुखना डुंगर दबाइ गया सहु, स्वामी प्रसंगे तमारा;
जुओ चंद्र थकी रे'न केवी खीली;
दीसे न्यारा न्यारा न्यारा तारा सारा,
संग वसो रती रंगे हशो. दीलदार.

वीरसींह— ३६

हाय थयो शत्रु मारो आ संसार,
हा अभागी पत्नी जागी;
प्रीय सुकुमार जीवण आधार कर्यो लाचार,

दील मही प्रजले वीरह अंगार. हाय.
तुछ सहु वैभव राज भंडार,
मनना वीचार कहुं क्यां बार जगत आधार.
सुतवीण देखुं हुं बधे अंधार,
बदन बदन दीन फीकर अपार, हाय.

वीरसींह— ३७

थाओ सज मारा सुरा क्षत्री वीरो,
रे अचानक आवी आफत;
युद्ध प्रसंग विचारी रणधीरो. थाओ सज.
नोकरनो थयो अरी, छेदुं रणे शीर धरी;
वेर लऊं मारुं एथी जरे जरी;
सुत मारा प्राण प्यारा, नठारा, हाल तारा,
सुणी व्हाला, उठे ज्वाळा क्यां तुं बाला, रे गुणाला. थाओ.

महाश्वेता— ३८

आवो, आवो, आवो, व्हाला, आवोजी;
रसीली, रसीली, रसीली, संगे महालो महालो महालो,
व्हाला आवोजी.
जोबन अमल अमल कमल
प्रफुल भ्रमर न्यालो न्यालो, आवो व्हाला आवोजी;
राजकुमारी हुं रंक हती वन,
हार हीरामणी रत्न मल्या तम,
जुलो हृदे मळी प्रीतम प्रीती प्यालो प्यालो;
आलषो व्हाला आवोजी.

भीलो— ३९

अल्या नाचहुं, कुदहुं, रमहुं ओ पुंजीआ थइहुं अल्याओ अमर
हाथो आगीओ वेताल, लुंटयो गोमनो कलाल.
पीया दारु पीलाल, लुटी चोरी ओणी माल,
ढोरां चारहुं. ओ पुंजीआ.

ठकराणी होठे करीहुं खटपट, मौडांनी मेठाइ खाइहुं झट झट;
पीहुं हुका कहुंवा अमे घट घट. ओ पुंजीआ.

कनककळा— ४०

वनी लाचार, रे धीक्कार, नारी जे नकामी;
हती वीख्यात, हींदी मात, हालत आशी पामी.
अरे गुजरातनी कमजात, रांडो रोझडीहा;
करी कंकास, देती त्राश, स्वामीने नडीहा.
पतीने पापीणी ते वेठीआ गुलाम जाणे;
करी व्यभीचार, अभागी यारथी, आनंद माणे.
सतीना वाहीथी जे शोभीती, स्वतंत्र भूमी;
करी कंगाल, कुडी रांडोए परघेर घुमी.
करेरे हाल मारा, आथी ए बेहाल थतां;
लुटुंना पापथीरे घोर नर्क मांही जतां.

बाब ३ तीसरा.

माधव— ४१

तजीं सुख राजरीधी हाय अहीं बेहाल बन्योछुं, कंगाल बन्योछुं.
प्रीयानो प्रेम केदीने वली हु केदी बन्योछुं बेदर्दी बन्योछुं.
वहाली प्राण प्रीया हाय तजी हुं नीराशी थयोछुं,उदाशी थयोछुं.
नकामी देहने रीबावा हाय रागी थयो तुं, बेराग थयो तुं.
न जाणुं जींदगीमां शुं शुं थवा प्राण रह्यो तुं, नादान रह्यो तुं.
अरे दशा आवी थतां शुभ धारी रह्यो शुं वीचारी रह्यो शुं.

इन्दुमती— ४२

ललीता ललीत वरलाल हृदय मणी माल तणा आहाल,
अरेरे कुटील क्रुर काळ, अधम चंडाळ, तने नहीं ख्याल.
अमृत आंह्य तजी जउं हाय वीरह वीश मांह्य;
रीबावा काय हां रा म श्री रा म रा म.

दुखीआ वीकल रमणी दीवस रजनी बनी वीकराल;
सुशीला वीमल कदली प्रजली वीजली वीरह दव काळ
मोहनलाल छोडावुं हाल हुं अबला बाल;
प्रबळ प्रेमाल. ललीता.
हा रा म रा म श्री रा म रा म.

माधव— ४३

ए अलबेली, ए रसीली, हेमवेली,
हस्त णेली, दइ गइ आराम;
रहुं जउं आवो दाव, नहीं मळनार, जीव जानार;
शुळी चडनार, ए शुं करनार, लुटी पडनार, वचनथी वाम.
ए लटकाली, ए गुणाली, ए रुपाली, क्षत्री वाली, कोनी होशे श्याम;
रुमझुम कहीं गइ क्यांय मंतरमां.
स्वअंतरने, आ अंतर मांह्य, अंतरना,
नीरंतदना गणीवर श्याम.

कनककळा— ४४

नीर्लज काया फट फट थातां, शींद राखी रही प्राण;
पुत्र परम शुद्ध पारस मणीने दीधुं दुष्ट दवाण.
मात लजावी जात लजावी, भोळानाथ दुभावी;
स्वामी सुख रीद्धी सहु त्यागी, करम हीणी वन आवी.
मात भुमी शींद भार वेंढारे, तारे अंतर शल्य;
भाइ चांदलीआ दइ अंगारा, काया करने राख.
सूत माधव सहु क्षमा करजे मात तणा अपराध;
पाप करम कादवमां डुबी करुं नीज आतम घात.

माधव तथा सरदारो— ४५

सौ शूर धीर वीर. रण क्षेत्रमां अधीर;
क्षत्रीय वटने धरीने देजो समरमां शरीर.
जाओ हूकम झट शीरपर धरी, मम तातनी करवा साह्य;
हुं पण स्नेही आफट टाळी, आवुंछुं पळ मांह्य.

आतीर तरकस बरछी खंजर, भाला सांग कटार;
मलेच्छ मुगल दळ मारी करशुं राजनी जय जयकार.
मलेच्छ तणुं बळी दइ कालीने बतावत्रा रण सूर;
आ समशेर यवन खुन पीवा थइ छे अती आतुर.
फाग खेलीशुं लाग जोइने, उठावी शोणीत रंग;
जंगी जंग वीशे जय जय जय वदशुं माधवसींग.

लालखां— ४६

दील रंझ गया मन शोख बढा, रण झंग रंगसे खेला;
मै शेर बडा समशेर फीरा देमीर, मार शीर जेला.
खांसाब, खांसाब, बनजीउं शाह मै पहेला.
कमबख्त बांधके लाया,
वोदीनका नीमक दीखाया, हैनेक इमान बढाया;
भरपुर हुं आ खुश आज, मुजे शहाबाश.
हजुरी खास हुं आ मै झंगी बहादूर छेला. दीलरंझ.

महाश्वेता— ४७

अचानक हाय शुं कहेवाय अरे जगराय,
हतां संजोगी पलमां ते वीयोगी थाय.
चडयुं वादळ वीरहनुं, प्रबळ थइ आशा अफळ;
वरसतां प्रेम आ सुहाय हृदय भींजाय.
जीवन वीण जीवन रहुं, जेम मणीधर मणी हीन;
जेम चकोरी चंद्रवीण, जळवीण सरीता दीन. अचानक.
पलकमां सुख पलकमां दुःख, हरखने हांण;
स्वप्न उंघ अतीशे, थाय न जागे जणाय.
चंचळ जीवन जग वीशे जेम वीजळी चमकार,
वायु मही वायु जतां जगं सघळुं सूनकार.
प्रीती खाडे पडयो पस्ताय वीयोगी प्राण,
भटकतो भुल पामीने भवे अथडाय. अचानक.

वीरसींह— ४८

हो अंतकाळे स्मरुं श्री राम,
पुत्र वीजोगी नीरजीव काया, फांसी चडशे राम. हो.
नीर्दयने सुख संपत्ती सज्जनने दे शूळ;
वेश्याने पकवान फळ साधवी फाके धुळ. हो.
माधव मायाए ठग्यो, पामर प्राण अनाथ;
माधव माया त्यागतां माधव क्यां जगनाथ. हो.
छो संगाथी सबळ हे, सत्य तणा श्री राम;
दीन जन पाल कृपाल हे, राम राम श्री राम. हो.

लालखां— ४९

चलो–चलो–घरके नेक इमान, धरो–धरो–सच्चा मालीक ध्यान;
डरो–डरो–करते कोइ बद काम, देखो बदका बद अंझाम.
करो–करो दाना दोस्तको सलाम, चहो–चहो–सबको भाइकेसमान;
मरो–मरो–मेरे जैसे सैंतान, है आखीर एही कलाम.

रुपसुंदरी— ५०

छेला छबीलाने रुपे हशी,
व्हाला वालमना लगनमां फसी—हुंतो.
सरीता सींधु जयम, चहे पवन चहे सुगंध;
वरशा ज्यम चातक चहे त्यम चाहु प्रीय कंथ.
सुरत रसीली आ दीले वसी,
मन वनमां आवी वस्युं ए मगराज स्वरुप;
वीरह दवे वन सळगतां, मळशे क्यां वन भुप,
क्यारे आलींघन देशे धशी. छेला.

इन्दु— ५१

रे दीलधर सहीअर करम कथा कहुं मारी जे वीती;
सुंदर चंदर सम मम मनहर मुरती तुरंगे फसी हतीए. कहुं.
मन आसन मांही वस्युं, प्रीतम प्रेम स्वरुप,

नेत्र नीरे नवडावतां, प्राण चडावे पुष्प;
प्रीयवर अंतर अंतर बाळे नीतीए प्रीतम एकज सतीने. व
देवी सींह दयाळु श्री तात सुशीला मात,
स्वामीना सुख कारणे, जोगण थइ आ जात;
अन्नजळ वीणवन सहनकरी दुख, आवीरहीअही आस्थीतीए. क.
नीजनुं चहाता नहीं भलु, स्वामीना सुख काज;
प्राण पाथरे ते सती बाकी रांड समाज,
ननम लग्न अगनथी बळतुं जेमतेम करी मेळवुं पतीने. कहुं.

इन्दुमती रुपसुंदरी— ५२

सखी झटपट अहींथी चालतु,
लउं वेर नक्की ए काळनुं;
लाग धारी, पापी मारी, आश तारी, पुरुं प्यारी.
हा हृदये जवाळा छे भरी, पण मुज मन धीर रहे ना धरी;
मुज व्हाली, डर खाली. सखी झटपट.
(पण बेन वखते कोइने जाण थशे तो)
(तो शुं प्रीतमने माटे प्राण आपी परलोकमां सुखी थइशुं.)
सतीनो शाणीए धर्म तु जाणीने. सखी झटपट.
ज्यां त्यांथी शोधी लावीने प्रीय तुज संगे परणावीने;
सुखी थाशुं हरखाशुं,
पीडाने वामीने, पामवा स्वामीने. सखी झटपट.

इन्दुमती— ५३

मानुं बे'नी तारो अतीशे आभार,
छुटयां पापी करम;
वीपत्ती टळी, कामना फळी, रहीसुं हळी, पतीने मळी;
मन मान्या प्राण आधार. मानुं.
गइ गइ ग्रीष्म वीरह पीड व्हाली,
खीली वसंत बहार;
मनमां तनमां वन महा वनमां. मानुं.

स्तुती—　　　　　　　　५४

करुणाल तमो करुणाए पामी, नट नाटक क्षीर पार;
सज्जन ज्ञानी शुभ पदवी पाम्या परमानंद आचार.
अज्ञानी अवळे रस्ते जइ पाम्या कष्ट अपार;
मंडळ सर्व तम मंगळ मय दर्शन चाहे अवीकार.
परणाम प्रभु तन मन तम शरण जयजय कृष्ण मुरार. करु.
अनार्यना आ धर्मनो, आ काळ क्रुर कर्मनो;
वीनाशी शान्ती शर्मनो, हे आणो इश नाश.
सत्य नीती धर्मनो, ज्ञानने सुकर्मनो;
आर्यना स्वधर्मनो, दीन करो प्रकाश.　　　　करुणाल.

समाप्त.